ये राष्ट्रवाद की सकारात्मक दृष्टि है। ये मेरी निमित्त है और इसलिए स्वाभाविक रूप से इन सबको करते-करते हम सब की जीने की आकांक्षा बलवती करना, जीने की आकांक्षा क्यों? क्योंकि सकारात्मक वातावरण को स्थापित करने के लिए हम जियेंगे। मरने वाले लोग नहीं हैं। इसलिए हम कहते हैं कि मृत्युंजय भारत। मृत्युंजय भारत क्या होता है? मृत्युंजय भारत वह वास्तविक रूप से सारे दुनिया को सही दिशा देने वाला, कभी भी समाप्त न होने वाला, ऐसा अगर कोई राष्ट्र है तो वह भारत राष्ट्र है। इसका कई प्रकार के शब्दों में वर्णन किया गया है।

यहां पर लोगों ने राष्ट्र संकल्पना को समाप्त करने के लिए कोशिश की। अगर हम ईसाईयत और इस्लाम के सन्दर्भ में देखते हैं तो उन्होंने कहा कि सारे विश्व में अगर ईसाईयत स्थापित हो जाता है तो राष्ट्र कल्पना समाप्त हो जायेगी। राष्ट्र कल्पना नहीं रहेगी। क्योंकि सभी एक ही तत्व को मानने वाले हो जायेंगे। इस्लाम ने भी यही कहा है और ये इसाई और इस्लाम के जगत् ने इस राष्ट्र की कल्पना को नष्ट करने का प्रयास किया। परन्तु जो स्वाभाविक होता है वह कभी समाप्त नहीं होता, संकल्पनाएं समाप्त नहीं हुई, छोटे-छोटे इस्लामिक देश बनें। ईसाईयों को मानने वाले देश बने। आपस के संघर्ष चलते रहे क्योंकि राजनैतिक राष्ट्रवाद समाप्त नहीं हुआ। आज कहां इस्लाम को मानने वाले देश आपस में एक हैं? कहां तक हम राष्ट्रवाद की भावना समाप्त कर लेंगे? इसाइयत का क्या हुआ है। इसलिए दो प्रकार के प्रयत्न हुए। एक तीसरा प्रयत्न हुआ कम्यूनिजम के द्वारा। कम्यूनिजम ने कहा ये सारा विश्व एक है। इसमें दो ही प्रकार के लोग हैं। एक शोषण करने वाले और एक अत्याचार को सहन करने वाले। एक शोषित हैं और एक शोषक है, और ये उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय बात की। सारा विश्व एक अन्तर्राष्ट्रीय कोई किसी प्रकार का भेद नहीं। कोई संकुचितता नहीं। ये रखने का प्रयास किया। आज हम क्या देखते हैं आज हम देखते हैं कि कम्यूनिजम ही बंट गया। चीन का कम्यूनिजम एक है, रशिया का अलग है और भारत में अगर हम सारे कम्यूनिजम पार्टी का इतिहास देखेंगे तो कितने टुकड़े-टुकड़े होते गये और कहां अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक करने की बात करने वाले विचार छोटी संकुचित भिन्नताओं में बंट गये और ये स्वाभाविक है। ये होना ही था क्योंकि प्रकृति भिन्न रहती है, विचार भिन्न रहते हैं, जीवनशैली में भिन्नता रहती है, परन्तु वह जीवनशैली सकारात्मक हो इसके लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता है। समान करने की आवश्यकता नहीं